राष्ट्रोपनिषत्-प्रस्तावना-शतकम्

संस्कृत-रूपान्तरण-कर्त्ता
आचार्य डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर विद्यालङ्कार
(महामहिम-राष्ट्रपति-सम्मानित)

हिन्दी-रूपान्तरण-कर्त्ता
सौ. श्रीमती इन्दु शर्मा
एम.ए., शिक्षाचार्या

अंग्रेजी-रूपान्तरण-कर्त्ता
महामण्डलेश्वर स्वामी श्री ज्ञानेश्वरपुरीजी महाराज
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

(गताङ्कादग्रे) **बाह्य-रिपोः सा क्षतिर्न,याऽऽभ्यन्तर-रिपोर्बोभवीत्यपूर्या ।**
राष्ट्रं रिक्तं कुरुते, मूषकवदाभ्यन्तरो घोरतर रिपुः ॥50॥

बाहरी शत्रु से वह क्षति नहीं होती है जो की भीतरी शत्रु से अपूर्णीय क्षति होती है। भीतरी घोरतर शत्रु मूषक की भाँति ही राष्ट्र को खोखला बना देता है।

Outside enemies cannot do so much harm as inside ones can. Awful inside enemies like mouse destroy the country from the inside. |50|

तस्कर - करचौरा अपि, सन्ति न्यूना नाभ्यन्तर-रिपुभ्योऽत्र ।
दृष्टिरिह तथा रक्ष्या, यथा मूषकेषु विडालेन रक्ष्यते ॥51॥

तस्कर और कर की चोरी करने वाले भी भीतरी शत्रुओं से यहाँ कम नहीं होते हैं। इन पर उसी प्रकार तीव्र दृष्टि रखनी चाहिए, जिस प्रकार बिलाव के द्वारा चूहों पर रखी जाती है।

Inside enemies are also the smugglers and those who steal the taxes. They should be carefully watched like the cat watches the mouse.

शिक्षा सम्प्रति तथा न, प्रदीयते यतः स्युरुत्तम - संस्काराः ।
अतः पठित - लिखितेष्वपि, भ्रष्टाचार-लिप्तता दृष्टिपथमेति ॥52॥

इस समय वैसी शिक्षा प्रदान नहीं की जातीं, जिससे उत्तम संस्कार पैदा होते है। इसीलिए आज के पढ़े लिखे लोगों में भी भ्रष्टाचार में लिप्तता दृष्टिपथ में आ रही है।

Nowadays, that education is not given which through which the highest character can be achieved. Because of that even educated people get caught in the web of corruption.

मानस - प्रदूषणमेव, सर्वानर्थमूलमिति किं ज्ञायते न ? ।
ज्ञायते यदि किं तन्न, समूलमुच्चाट्यते सद्यः क्षतिकरम् ? ॥53॥

मन का प्रदुषण ही सभी अनर्थों का मूल है, क्या यह जानना नहीं जाता ? यदि जाना जाता है तो क्यों नहीं वह क्षति करने वाला तत्काल मूलसहित उच्चाटित कर दिया जाता ?

Who does not know that the pollution of the mind is the root cause of all these problems? And if it is known why it is not immediately uprooted?

संस्कृत-शिक्षैवैका, मानस-प्रदूषणं विशोधयति सुतराम् ।
किंन्त्वद्य प्रशासनं तु, सुधीभिरपि विज्ञापितं नैव शृणोति ॥54॥

एक संस्कृत - शिक्षा ही मन के प्रदूषण को सर्वथा विशुद्ध कर देती है, परन्तु इस सम्बन्ध में सुधीजनों के द्वारा भी विज्ञापित किया हुआ प्रशासन तो सुनता ही नहीं है।

Only Sanskrit education can completely remove the pollution of the mind, but the administration does not even listen to the presentation of the wise people.

अधिगत-संस्कृत-शिक्षो, भवति सच्चरित्रः स्वीय-राष्ट्रभक्तः ।
न हि स तत् कर्म करोति , यद् राष्ट्रं हानिं प्रापयतु कदाचन ॥55॥

संस्कृत की शिक्षा प्राप्त किया हुआ व्यक्ति सच्चरित्र और स्वराष्ट्र-भक्त हुआ करता है। वह कार्य नहीं करता है, जो कभी राष्ट्र को हानि पहुँचाये।

Sanskrit educated person is of good character and a patriot. He will never do the things which will harm the nation.

स न भवत्यातङ्ककृत्, तस्करता-लिप्त आयकर-चौरो वा ।
सार्वजनिक-सम्पदेऽपि, हानिं न ददाति स कदापि कुत्रापि च ॥56॥

वह संस्कृत की शिक्षा प्राप्त किया हुआ व्यक्ति न आतङ्ककारी होता है, न तस्करता में लिप्त होता है अथवा आयकर की चोरी करने वाला ही। सार्वजनिक सम्पदा को भी वह कभी कहीं हानि नहीं देता है।

Sanskrit educated person becomes neither terrorist nor gambler, and he does not steal taxes. He never damages public property.

(क्रमशः)